✓ भाषाकौशलानि

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)
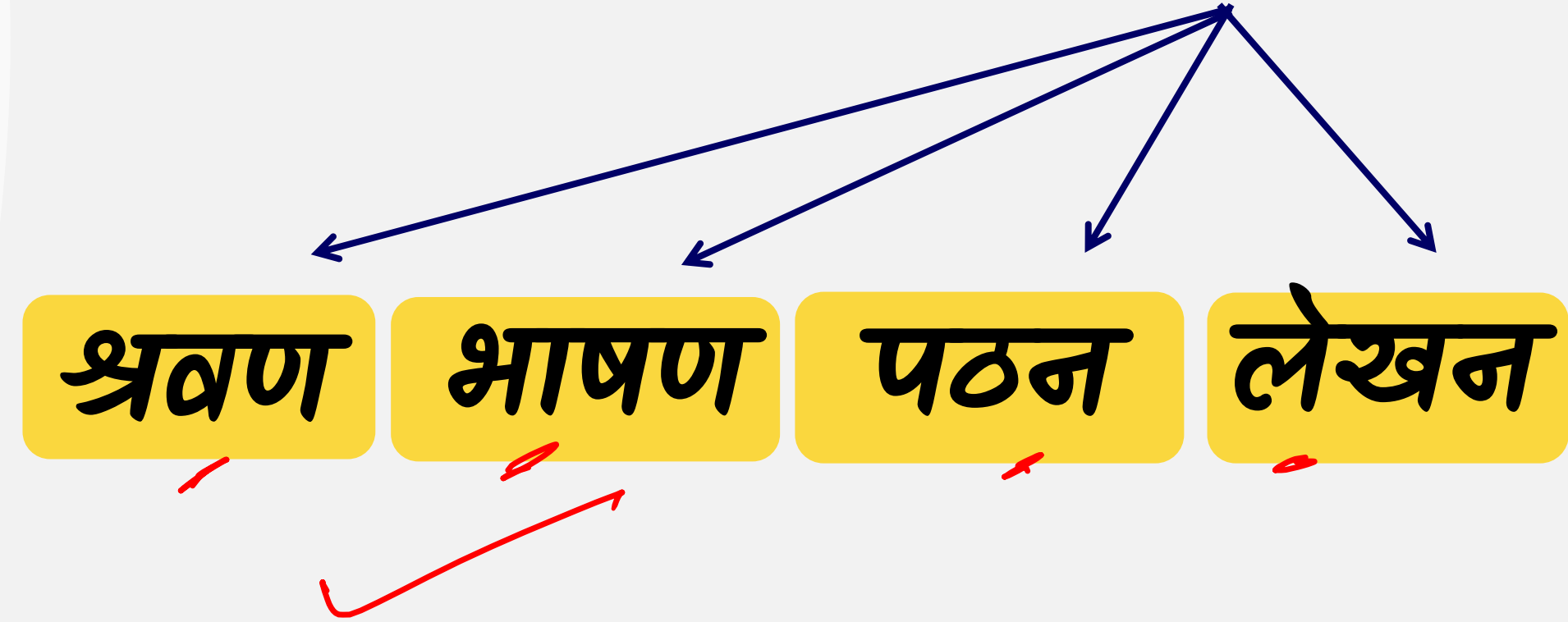
भाषा कौशल के सोपान

Sky Educare
www.skyeducare.com
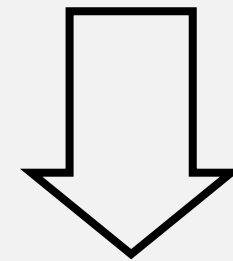
- **भाषा** एक ऐसी व्यवस्था जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त कर सकते हैं, और दूसरों के विचार एवं अभिप्रायों को हम स्वयं समझने के लिए प्रयोग में लाते हैं।

भाषाकौशलानि

- भाषा के **दो रूप** होते हैं - **1. मौखिक, 2. लिखित।**
- भाषा के **चार कौशल** होते हैं - **सुनना, बोलना, पढ़ना** तथा **लिखना** का।
- अतः भाषा कौशल वह है जिसमें सुनने, बोलने, पढ़ने तथा लिखने का कौशल सम्मिलित होता है।

भाषाकौशलानि

- श्रवण और वदन/भाषण कौशल ध्वनि विज्ञान से जुड़े हुए हैं।
- पठन एवं लेखन कौशल लिपि विज्ञान से जुड़े हुए हैं

भाषाकौशलानि

श्रवण

भाषण

पठन

लेखन

भाषाकौशलानि

✓ भाषा के अधिगम के लिए इन कौशलों को इसी क्रम में याद करना होगा, तभी भाषा का सही विकास संभव हो पायेगा ।

➢ भाषा कौशल के सोपान

1. श्रवण
2. भाषण
3. पठन
4. लेखन

भाषा कौशल के सोपान

LSRW

श्रवण	भाषण	पठन	लेखन
1	2	3	4
L	S	R	W

भाषा कौशल के सोपान

श्रवण | भाषण | पठन | लेखन

बुद्धि के लिए → Input ①

Output ②

भाषा कौशल के सोपान

	श्रवण	भाषण	पठन	लेखन
उद्देश्य →	श्रुत्वार्थग्रहणम्	मौखिकाभिव्यक्तिः	पठित्वार्थग्रहणम्	लिखिताभिव्यक्तिः
	सुनकर अर्थ ग्रहण	बोलकर अभिव्यक्ति	पढ़कर अर्थ ग्रहण	लिखकर अभिव्यक्ति

• भाषा कौशल के सोपानो के उद्देश्य

Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

श्रवण

भाषण

पठन

लेखन

श्रुत्वार्थग्रहणम्

पठित्वार्थग्रहणम्

उद्देश्य- ग्रहण

- Sk Katariya

SE Sky Educare

• भाषा कौशल के सोपानो के उद्देश्य

श्रवण

भाषण

पठन

लेखन

मौखिकाभिव्यक्तिः

लिखिताभिव्यक्तिः

उद्देश्य- अभिव्यक्ति
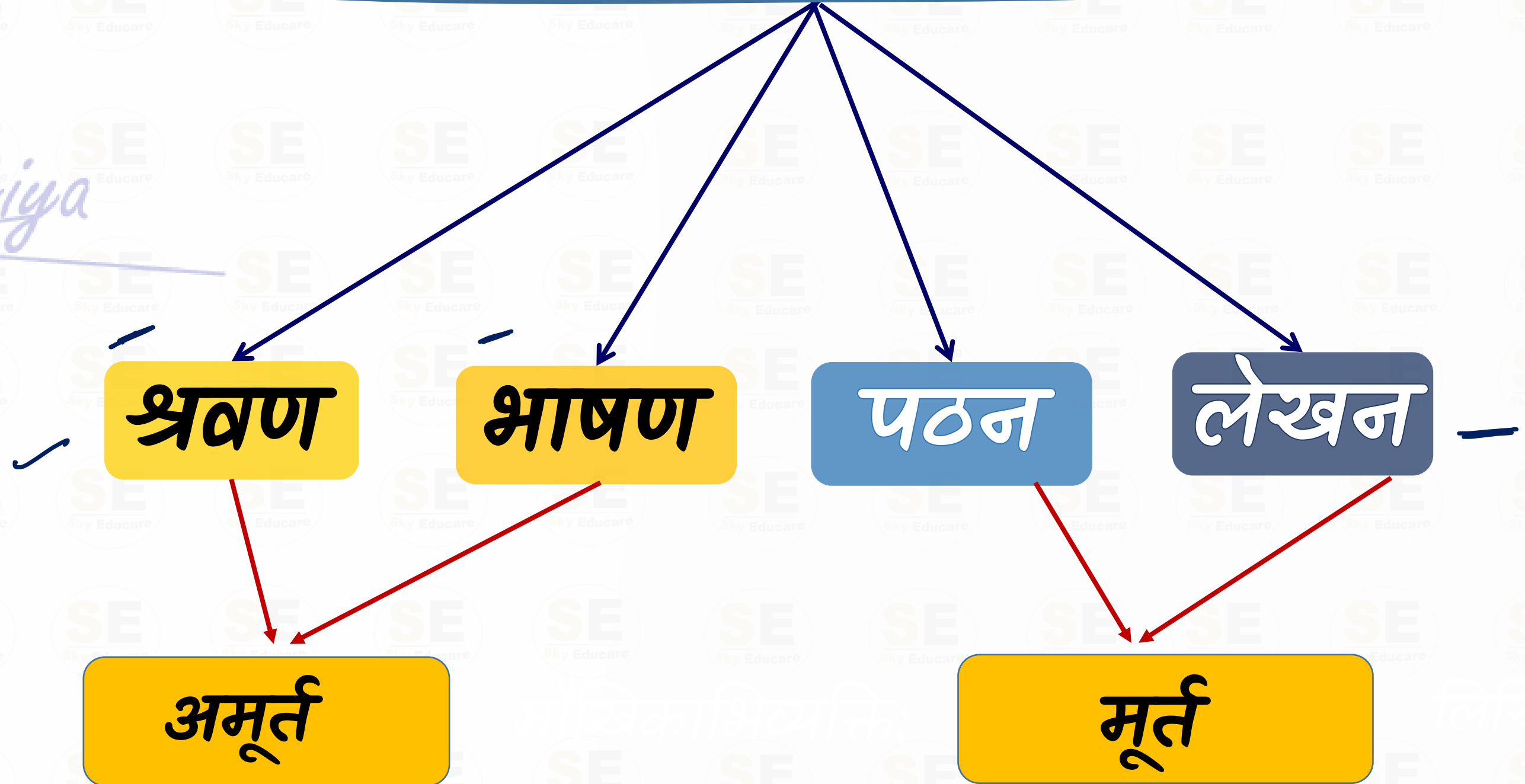
- Sk Katariya

भाषा कौशल के सोपान

- श्रवण
- भाषण
- पठन
- लेखन

श्रवण, भाषण → अमूर्त

पठन, लेखन → मूर्त

भाषा कौशल के सोपान

श्रवण | भाषण | पठन | लेखन

विज्ञान →

ध्वनि विज्ञान (श्रवण, भाषण)

लिपि विज्ञान (पठन, लेखन)

भाषाकौशलानि

- इन चारों कौशलों का सही क्रम में विकास करके हम संस्कृत भाषा में दक्षता प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि यह क्रम एक मनोवैज्ञानिक क्रम है ।

- अत: संस्कृत छात्रों से अनुरोध है कि वह इन चारों कौशलों का सही क्रम में अभ्यास करें तभी भाषा का सही विकास हो पाएगा ।

- श्रवण कौशल

श्रवण-कौशल

यह भाषा का पहला कौशल है एवं इसका उद्देश्य सुनकर अर्थ ग्रहण करना है।

श्रुत्वार्थग्रहणम्

- भाषा का ग्रहण प्रायः श्रवण के माध्यम से ही होता है लेकिन केवल सुनना मात्र श्रवण कौशल नहीं है बल्कि **ध्यानपूर्वक सुन कर वक्ता के आशय को ग्रहण करना** ही **श्रवण कौशल** है। यह अन्य तीनों कौशलों का मूल आधार है।

श्रवण-कौशल के विकास के तत्व

- वक्ता के मुख से उच्चारित ध्वनियों को ध्यानपूर्वक सुनना।
- वक्ता का विषय रुचिकर हो तो श्रवण का विकास होता है।
- वक्ता की संप्रेषण की शैली अगर उचित है तो श्रवण का विकास होता है।
- बालगीत, अभिनयगीत, या आकाशवाणी, दूरदर्शन, आदि सुनने से श्रवण कौशल का विकास संभव है।
- वक्ता की बात को सुनते समय ध्यान वक्ता के वक्तव्य पर ही होना।

श्रवण में बाधाएँ

- वक्ता के मुख से उच्चारित ध्वनियों को **ध्यानपूर्वक न सुनना** ।
- विषय रुचिकर **न** हो तो श्रवण का विकास बाधित होता है ।
- वक्ता की संप्रेषण की शैली अनुचित होना जैसे - **वक्ता द्वारा तीव्र या अस्पष्ट या तेज आवाज में या धीमी आवाज में बोलना ।**
- वक्ता की बात को सुनते समय ध्यान वक्ता के वक्तव्य पर **न** होना।

✓ भाषण-कौशल

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

भाषण-कौशल

मौखिक रूप से विचाराभिव्यक्ति भाषण कौशल का उद्देश्य है। यह द्वितीय भाषण-कौशल है।

- अपने आशय को प्रकट करने के लिए शब्दों का संगठित प्रयोग किया जाना ही भाषण कोशल है।
- शब्दों का उच्चारण करना मात्र भाषण कौशल नहीं है बल्कि उन का शुद्ध उच्चारण करना ही भाषण कौशल है।

भाषण-कौशल

- भाषण कौशल जन्मजात कौशल नहीं होता और न ही वंशानुगत होता है।
- हम जिस वातावरण में रहकर जो भी सुनते हैं और लोगों को बोलते हुए देखते हैं उसी के कारण हमारे भाषण को बल मिलता है।
- शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण, उच्चारण में आरोह अवरोह क्रम का ज्ञान, गद्य एवं पद्य का गति के अनुसार भाषण, भावाभिव्यक्ति ठीक, प्रकार से उच्चारण करने का सामर्थ्य उत्पन्न करना, शब्द भंडार में वृद्धि, रुचि पूर्ण प्रस्तुति।

भाषण-कौशल के विकास के तत्व

- निरंतर अभ्यास । गीत, भाषण स्पर्धा, अंताक्षरी, वाद विवाद आदि।
- भाषण कौशल जन्मजात कौशल नहीं होता और न ही वंशानुगत होता है।
- हम जिस वातावरण में रहकर जो भी सुनते हैं और लोगों को बोलते हुए देखते हैं उसी के कारण हमारे भाषण को बल मिलता है।
- अगर बच्चा हिंदी भाषी इलाके में रहता है तो वह हिंदी आसानी से सीख जाता है और यदि इंग्लिश भाषा के वातावरण में रहता है तो वह इंग्लिश आसानी से सीख जाता है।
- भाषा कौशल के विकास के लिए वर्णों के उच्चारण स्थानों का ज्ञान आवश्यक है ।

भाषण-कौशल में बाधाएँ

- वर्णों के उच्चारण स्थानों का ज्ञान न होना भाषण में बाधा बनता है।
- अशुद्ध बोलना, शब्द भंडारण की कमी, विराम चिन्हों को ध्यान में न रखना, अपर्याप्त स्वर (अधिक तेज बोलना या अधिक धीरे बोलना) गद्य एवं पद्य की गति के अनुसार न बोलना।

- Sk Katariya
Sky Educare
www.skyeducare.com
✓ पठन-कौशल
Click to Join → स्काई एज्युकेयर YouTube चैनल (Sky Educare)

पठन-कौशल
(वाचन कौशल)

उद्देश्य → पठितार्थग्रहणम्

- **यह भाषा शिक्षण का तृतीय कौशल है।**

- लिखित रूप में विद्यमान अंश को पढ़कर उसके भाव को ग्रहण करना पठन कौशल कहलाता है।
- लिपि संकेत एवं वर्णों का उच्चारण पूर्वक, शब्दों एवं वाक्यों का अर्थ, बोध सहित ग्रहण प्रक्रिया ही पठन/वाचन कौशल कहलाती है। अतः इसका मूल आधार लिपिबद्ध ध्वनिरूप है।
- श्रवण की अपेक्षा पठन से अधिक स्थाई ज्ञान की प्राप्ति होती है।
- विषय वस्तु को सुनने में जो अशुद्धियां रह जाती हैं उसका पठन से निवारण हो जाता है।

पठन-कौशल
(वाचन कौशल)

उद्देश्य → पठितार्थग्रहणम्

- पठन प्रक्रिया दो कारकों से प्रभावित होती है - मुद्रा एवं शैली।
- पठन **शैली** से तात्पर्य है कि लिखित सामग्री को सही लय, गति, प्रवाह, विराम एवं उच्चारण के साथ पढ़ना।
- पठन **मुद्रा** : इसमें बच्चों को सिखाया जाता है कि किस प्रकार सही मुद्रा में खड़े होकर या बैठकर पुस्तक को आँखों से उचित दूरी पर रखकर कैसे पकड़ा जाए ओर उसका पठन किया जाए, एवं भावानुकूल पठन होना अत्यावश्यक है।

पठन-कौशल उद्देश्य

- गति लय पूर्वक उच्चारण सामर्थ्य संपादन (प्राथमिक स्तर हेतु)।
- समान गति से पठन का सामर्थ्य।
- भावों के अनुकूल तथा अभिनय पूर्वक पठन करना (माध्यमिक स्तर हेतु)।
- सृजनात्मक शक्ति का विकास व स्वशैली का विकास तथा आनंदानुभूति (उच्च स्तर हेतु)
- पढ़कर उसके भाव को ग्रहण करना

पठन के प्रकार

➢ पाठकों की संख्या के आधार पर

1. **व्यक्तिगत पठन**
(एक समय में छात्र द्वारा)

2. **सामूहिक पठन**
(एक समय में सभी छात्रों द्वारा पठन)

➢ अभिव्यक्ति के आधार पर

➢ सस्वर पठन
(स्वर के साथ पठन)

1. **आदर्श वाचन** (शिक्षक के द्वारा)
2. **अनुकरण वाचन** (छात्रों के द्वारा)
3. **समवेत वाचन** (समूह में छात्रों के द्वारा)

➢ मौन पठन
(मौन रहकर पठन)

1. **सामान्य मौन पठन**
2. **गंभीर मौन पठन**
3. **द्रुत पठन**

1. आदर्श वाचन (शिक्षक के द्वारा)
2. अनुकरण वाचन (छात्रों के द्वारा)
3. समवेत वाचन (समूह में छात्रों के द्वारा)

1. सामान्य मौन पठन
2. गंभीर मौन पठन
3. द्रुत पठन

1. **आदर्श वाचन** (शिक्षक के द्वारा)
2. **अनुकरण वाचन** (छात्रों के द्वारा)
3. **समवेत वाचन** (समूह में छात्रों के द्वारा)

शुद्धोच्चारण की योग्यता का विकास।
लय-गति-यति- जैसे - विराम चिन्हों का ध्यान रखते हुए सस्वर पठन करने की योग्यता का विकास।

➢अभिव्यक्ति के आधार पर

स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास

पठन में मुख्यभावों को आत्मसात करने की योग्यता का विकास करना।

बालकों में चिंतन-मनन शक्ति का विकास करना।

1. सामान्य मौन पठन
2. गंभीर मौन पठन
3. द्रुत पठन

आदर्श वाचन (शिक्षक द्वारा)

- पाठ पढ़ते समय जब शिक्षक स्वयं बोल- बोलकर पढ़ाता है तो उसे आदर्श वाचन कहते हैं।
- शिक्षक पदों का स्पष्ट उच्चारण करता है, ताकि छात्र उसका अनुकरण कर सकें।
- सभी शब्दों का शुद्ध उच्चारण हो। ह्रस्व दीर्घ स्वरों के उच्चारण में सावधानी रहे।
- कक्षा में शांति रखनी आवश्यक।
- उच्चारण स्थानों के अनुसार आदर्श वाचन करना आवश्यक।
- पाठगत विराम चिन्ह व अन्य चीजों को ध्यान में रखकर पठन में सावधानी रखे।
- भावों के अनुकूल ही पाठों का पठन किया जाना चाहिए भावानुकूल पाठ आदर्श वाचन का अत्यावश्यक तत्व है।

अनुकरण वाचन

(छात्रों के द्वारा)

- छात्र शिक्षक के द्वारा किए गए आदर्श वाचन का अनुकरण करते हैं।
- सभी शब्दों का शुद्ध उच्चारण हो। ह्रस्व दीर्घ स्वरों के उच्चारण में सावधानी रहे।
- कक्षा में शांति रखनी आवश्यक।
- भावों के अनुकूल ही पाठों का पठन किया जाना चाहिए।

समवेत वाचन

(समूह में छात्रों के द्वारा)

- सभी छात्रों से शिक्षक कभी मौन , कभी उच्चस्वर मे भावों के अधिगम के लिए समवेत वाचन करवाता है।
- सभी शब्दों का शुद्ध उच्चारण हो। हस्व दीर्घ स्वरों के उच्चारण में सावधानी रहे।
- कक्षा में शांति रखनी आवश्यक।
- भावों के अनुकूल ही पाठों का पठन किया जाना चाहिए।
- प्रारंभिक कक्षाओं के लिए श्रेष्ठ।

1. सामान्य मौन पठन

मौन पठन

- मौन रहकर पठन सामान्य उद्देश्य हेतु पठन करना, जैसे - कथा पठन, समाचार पत्र आदि का पठन।

गंभीर मौन पठन

मौन पठन

- पाठ्य सामग्री की तह तक पहुंचने व गंभीरतापूर्वक चिंतन मनन करने के लिए मौन पठन किया जाता है।
- सारगर्भित क्लिष्ट वह अधिक चिंतन वाली विषय वस्तु का मौन रहकर पठन किया जाना भी इस में सामिल है।

द्रुत पठन

मौन पठन

- सीखी हुई बात का अभ्यास करने और अवकाश का सदुपयोग करने के लिए द्रुत पठन किया जाता है।
- सूचना एकत्रित करने एवं आनंद प्राप्त करने के लिए भी द्रुत मौन पठन किया जाता है।

पठन कौशल अभिवृद्धि की विधि:

- **वर्ण विधि:** - ***अक्षर बोध विधि/वर्ण बोध विधि-*** वर्णमाला के एक एक वर्ण का ज्ञान सरल कठिन प्रति/ सूक्ष्मात्-स्थूलं प्रति का अनुसरण करते हुए।
- **पद विधि:** - वर्ण के ज्ञान के धीरे धीरे दीर्घतर **पद** ज्ञान
- **वाक्य विधि:** - पदों के ज्ञान ज्ञान के बाद वाक्यों का ज्ञान, वाक्यों के आधार पर पठन ।
- **कथा विधि:** - वाक्य शिक्षण का दूसरा रूप जिसमें अनेक चित्रों के सहयोग से कथा बालकों को सुनाई जाती है चित्रों के नीचे कहानी से संबंधित बड़े बड़े अक्षरों में वाक्य लिखे जाते हैं।

अधम पाठक के 6 लक्षण पाणिनि शिक्षा में बताए गए हैं –

गद्य को गीत रूप में पढ़ना, अत्यंत तीव्रता से पढ़ना, पढ़ते समय सिर को हिलाना, विचारे बिना जैसा लिखा हुआ है वैसा पढ़ना, अर्थ को बिना जाने ही बोलना, अल्प कंठ से धीरे-धीरे पढ़ना।

श्रेष्ठ पाठक के पाणिनीय शिक्षा में 6 गुण बताए गए हैं -

श्रेष्ठ पाठक में मधुरता, अक्षरों की स्पष्ट अभिव्यक्ति, पदों का विच्छेद, अच्छा स्वर,धीरता तथा लय यह गुण होते हैं।

माधुर्यमक्षरव्यक्तिः, पदच्छेदस्तु सुस्वरः
धैर्यं लयसमर्थश्च षडेते पाठकागुणा।

✓ लेखन-कौशल

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

- Sk Katariya

Sky Educare

www.skyeducare.com

लेखन-कौशल

उद्देश्य → लिखिताभिव्यक्ति:

- **यह भाषा शिक्षण का चतुर्थ (अंतिम) कौशल है।**

- ध्वनि रूप में विद्यमान भाषा अंश का लिपि रूप में लिखा जाना ही लेखन है।
- भाषा के स्वरूप को स्थायित्व प्रदान किया जाता है ।
- यहां वर्तनी का महत्व है ।

लेखन-कौशल उद्देश्य

- अक्षर शब्द वाक्य के स्वरूप का ज्ञान
- भावों को लिपिबद्ध कर के स्थायित्व प्रदान करना
- पढ़े हुए विषय को लिखित रुप में अभिव्यक्त करना

लेखन कौशल अभिवृद्धि की विधि:

- दृष्ट लेखन विधि (जेकाटॉट विधि) (प्राथमिक स्तर के लिए)
- श्रुतलेखन विधि (माध्यमिक स्तर के लिए)
- अक्षर स्वरूप अनुकरण पद्धति

दृष्ट लेखन विधि (जेकाटॉट विधि) :

अध्यापक के द्वारा लिखे गए शब्दों का अनुकरण करके छात्र लिखता है या पुस्तक या श्यामपट्ट में देखकर छात्र अभ्यास करता है।

- अशुद्धियां कम होती है।
- विराम चिन्ह आदि का ज्ञान भी हो जाता है।

(प्राथमिक स्तर के लिए श्रेष्ठ)

श्रुतलेखन विधि :

- अध्यापक के पदों या वाक्यों को सुनकर लिखना।
- अध्यापक मध्यम गति से वाचन करें।
- वाक्य/पद पाठ्य पुस्तक से ही हो।
- विराम चिन्हों को न बोले बल्कि छात्र उन्हें समझने का प्रयत्न करें।
- छात्र स्वयं भावानुकूल विराम चिन्ह आदि का प्रयोग करें।

(उच्च प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के लिए श्रेष्ठ)।

अक्षर स्वरूप अनुकरण पद्धति:

अध्यापक अधिकाधिक श्यामपट का प्रयोग करें, गृह कार्य के अतिरिक्त अन्य विषयों पर लिखने का अभ्यास छात्रों से करवाया जाए